Vijay Kumar Jha
Asst Prof
Deptt in History
V.S.J College Rajnagar

Degree Part II

Modernization of Japan, Meiji Restoration

जापान मे पाश्चिम के प्रवेश से जापान कि राजनीतिक परिस्थिति असमान्य हो गया और सम्राट पर सामान्त हावी हो गया। क्योंकि खासकर अमेरिका को जापान में मनमानी करनी थी। मेइजी पुर्नस्थापना का तात्पर्य सम्राट कि शक्ति कि पुर्नस्थापना है। अतः जापान में आधुनिकरण के लिये मेइजी पुर्नस्थापना शोगुन और सामान्तवाद को खत्म करने के लिये उठाया गया सही कदम था। विदेशी हस्तक्षेप से प्रतिरक्षा हेतु जापान का नव निर्माण अत्यन्त आवश्यक था। जापान कि आधुनिकरण के लिये पाश्चिमी ज्ञान विज्ञान कि जानकारी प्राप्त कर आधुनिक राष्ट्र के रूप में जापान को बनाने कि आवश्यकता थी। अतः प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिक करण के लिये ठोस कदम उठाये गये जो निम्न है

(1) सामन्ती व्यवस्था (शोगुन) का अन्त :- 1868ई० तक सामन्ती व्यवस्था का अन्त हो गया जो एक रक्तहीन क्रांति थी।

(2) शासन तंत्र मे सुधार :- 1882ई० मे संविधान का निर्माण हुआ जिसे 1889ई० मे लागू किया गया जिसमें सम्राट को सर्वोच्च अधिकार मिला और एक विधायिका कि स्थापना किया गया, जिसमें प्रथम और द्वितीय दो सदन थे।

(3) सेना का आधुनिकीकरण :- जन साधारण के प्रत्येक वर्ग के लिये सेना के द्वार खोल दिये गये। सैनिक दृष्टि से जापान 6 जिलों में बांटा गया। सैनिक प्रशिक्षण के लिये विदेशी जानकारों को मंगाया गया। 1872ई० में नौ सेना विभाग का गठन किया गया।

(4) शिक्षा का पुर्नगठन :- जापान मे आधुनिकीकरण के क्षेत्र में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान से जापान के जनमानस को परिचित कराना, चरित्र निर्माण तथा सम्राट के प्रति निष्ठा जगाना महत्वपूर्ण मान दंड निश्चित किये गये।

Scanned with Cam

प्रत्येक स्त्री पुरुष के लिये शिक्षा अनिवार्य किये गये। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कई विश्व विद्यालय कि स्थापना किया गया। 1880 में क्योटो विश्व विद्यालय, 1877 में टोकियो विश्व विद्यालय 1882 में वासेडा विश्व विद्यालय खोले गये। 1869 में जापानी अँग्रेजी शब्दकोष प्रकाशित हुआ। मिल एवं बेन्थम कि लेख को जापानी भाषा में अनुवाद किया गया। अन्य विज्ञान, दर्शन, पुरातत्व के क्षेत्र जापानियों को आधुनिकता से परिचित कराने हेतु विदेशी विद्वानों को बुलाया गया। 1880 ई० में टोकियो में संस्कृत विद्यालय एवं 1913 ई० में एक महिला विश्वविद्यालय कि स्थापना किया गया।

(5) पत्रकारिता का विकास :— जापान में राष्ट्रीयता के विकास के लिये दैनिक समाचार पत्र याकोहामा माइनीचि शीम्बुन प्रकाशित किया गया। 1875 ई० तक लगभग 100 पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित किया गया

(6) धार्मिक जीवन में परिवर्तन :— मेइजी पुनर्स्थापना के बाद प्राचीन शिन्तो धर्म को लोकप्रिय बनाया गया। शिन्तो धर्म के अनुसार सम्राट के प्रति निष्ठा आवश्यक था। शिन्तो धर्म को राजधर्म घोषित किया गया जिससे जापानी जनमानस में एकता कि भावना प्रबल हुई।

(7) आर्थिक विकास :— पाश्चात्य औद्योगिक विकास के आधार पर औद्योगिक विकास कि नीति अपनाया गया 1870 ई० में उद्योग मंत्रालय कि स्थापना हुई। 1876 में मशीन के कल पुर्जे बनाने के कारखाना 1875 में सिमेन्ट के कारखाना 1876 में काच के कारखाना खोले गये। 1870 ई० में होन्सु में प्रथम रेशम लपेटने कि मशीन लगाई गई। टोकियो एवं ओसाका में गोला बारुद, बन्दूक एवं तोप के कारखाना खोले गये। अधिकांश कारखाना भाप की शक्ति से चलती थी।

यातायात एवं संचार माध्यमों पर ध्यान दिया गया। पहाड़ी इलाका में रेलवे लाइनों के निर्माण का श्रीगणेश हुआ 1893 ई० तक 1500 मील तक रेल पटरी बिछा दी गई। 1895 ई० तक 752 टेलीग्राफ घर खोले गये। 1877 ई०

Scanned with Can

में जापान को अन्तरराष्ट्रीय एक क्षेत्र में का सदस्य बना दिया। बैंकिंग व्यवस्था का विकास किया गया। 1873 ई० में नेशनल बैंक कि स्थापना किया गया। 1888 ई० तक 150 सौ से अधिक बैंक स्तित्व में आये। 1885 ई० में बैंक ऑफ जापान स्थापित हुआ। इस तरह जापान आर्थिक दृष्टि से यूरोपीय देशों कि श्रेणी में आ गया।

(8) जापानी जीवन शैली का पाश्चात्यीकरण :— जापान में पाश्चात्य शिक्षा के विकास के कारण जापान विदेशियों के लिए खुल गया जिससे जापान कि जीवन शैली पूर्णतया परिवर्तित हो गई जापान के सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लक्षित होने लगे वेषभूषा, रहन-सहन, खानपान एवं सामाजिक क्रिया कलापों में सभी जापानियों ने पश्चिम की नकल प्रारम्भ कर दिया। 1872 ई० में सभी अधिकारियों कि राजकीय पोशाक पाश्चिम देशों कि तरह हो गया।

अतः सभी विवरणों से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में जापान अपनी प्राचीनता के बन्धन को तोड़कर नवीन पाश्चात् शैली को अपनाया जिससे जापान का आधुनिकीकरण संभव हुआ।

आधुनिकीकरण का परिणाम जापान के लिए कल्याणकारी हुआ इससे जापान कि विलुप्त सम्प्रभुता प्राप्त हो गई तथा जापान अब यूरोपीय देशों कि श्रेणी में आ गये तथा जापान में सैन्यवाद एवं साम्राज्यवादी पृष्ठभूमि तैयार हुई जिससे देश कि औद्योगीकरण काफी गतिमान हो गया। 1871 ई० में शाही फरमान के द्वारा सामन्तवाद तथा सामन्ती अधिकारों को समाप्त घोषित किया गया और 1883 ई० में जापान में संविधान निर्माण प्रक्रिया प्रारम्भ हुआ और 1890 ई० में जापान में एक निश्चित संविधान लागू कर दिया गया। संविधान निर्माण के क्षेत्र में काउन्ट इटो का महान योगदान है क्योंकि उन्हें ही विभिन्न देशों के संविधान का अध्ययन कर संविधान बनाने का भार दिया गया था। यह संविधान लिखित था। संविधान के अनुसार सम्राट सर्वोच्च प्रधान, गेनरो सर्वाधिक प्रभावी संस्था, प्रीवी कौंसिल में सदस्यों कि संख्या 26 थी यह सम्राट के प्रति उत्तरदायी था।